नाम – डा. प्रदीप कुमार राय
विषय – राजनीति-शास्त्र
वर्ग – B.A. Part-2 (Hons.)
सत्र – 2019-20
पेपर – 04
अध्याय – 17 (2)

नाम – डा. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग,
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम

दिनांक – 11.05.2020

टॉपिक – भारतीय विदेश नीति के निर्माणक तत्त्व (शेष भाग)

(6.) पंडित नेहरू का व्यक्तित्व – पंडित नेहरू भारतीय प्रधान मंत्री के साथ-साथ विदेश मंत्री के रूप में भी अपनी व्यापक भूमिका निभाई तथा भारतीय विदेश नीति पर उनकी सोच, चिंतन एवं व्यक्तित्व का व्यापक असर पड़ा। जो साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और फासिस्टवाद के विरोध में दीखता है। अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान, महाशक्तियों के बीच विवाद एवं संघर्ष की अवस्था में असंलग्नता की नीति का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। इससे भारत के हित के लिये दूरगामी एवं व्यापक प्रभाव के रूप में भी देखा जा सकता है।

(7.) राष्ट्रीय हित – किसी भी देश की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा एवं हित होता है जो भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में भी है

राष्ट्रीय हित के अंतर्गत देश की एकता, अखंडता एवं सुरक्षा जहां स्थायी हित हैं वहीं आयामी हित में खाद्यान्न, विदेशी तकनीक, पूंजी विकास आदि रहे हैं। समय एवं परिस्थिति के अनुसार भारत द्वारा अपने दोनों हितों को बनाये रखने, संवर्धन करने तथा उसके प्रति सचेष्ट रहने का सदैव प्रयास होते आया है। यथा गुट निरपेक्षता की नीति, 1971 की संधि भारत-सोवियत मैत्री संधि, अफगान प्रकरण, ईराकना प्रकरण, N.P.T तथा CTBT आदि ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिसमें भारत के राष्ट्रीय हित की भावना प्रमुख रूप में निहित है।

8.) ऐतिहासिक परंपरायें — भारतीय विदेशनीति के निर्धारण में ऐतिहासिक परंपराओं का बड़ा योगदान रहा है। हिंदू सभ्यता, संस्कृति की सहिष्णुता, प्रेम और शांति का संदेश, ऋषि-मुनियों के उदात्त एवं शांतिप्रिय विचार, 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना, गौतम बुद्ध, महावीर, नानक के संदेश, गांधी का विचार सभी शांति सहिष्णुता एवं भ्रातृत्व भाव से प्रेरित रहे हैं।

ब्रिटिश शासन प्रणाली के पर आधारित राजनैतिक और प्रशासनिक ढांचा, अंग्रेजी भाषा को भी व्यापक स्थान मिला है। उप
उपनिवेशवाद, जातीय रंगभेद, मानवतावादी प्रयास, पंचशील, पड़ोसियों से शांतिपूर्ण

Scanned with CamScanner

संबंध भी ऐतिहासिक परंपराओं से प्रेरित हैं।
(9.) आंतरिक शक्तियों और दबावों का प्रभाव
आंतरिक शक्तियां और दबाव समूह का भी विदेश नीति के निर्माण में निर्णायक प्रभाव पड़ता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की जो आंतरिक स्थिति - आर्थिक, सैन्य एवं राज्यों के एकीकरण आदि को लेकर थी ~~असी~~ उसको ध्यान में रखते हुये वैदेशिक नीति के निर्माण पर प्रभाव पड़ा।

पं. नेहरू, श्रीमती गांधी, श्रीमती राजीव गांधी, मनमोहन सिंह, वाजपेयी, मोदी जैसे व्यक्तित्व का जहां वैदेशिक नीति एवं अंतर्राष्ट्रीय छवि में भारत का महत्व पड़ा। वहीं अल्पमत सरकार के काल में भारत आंतरिक स्तर पर ही सीमित रहा। सुषमा स्वराज का भी बतौर विदेश मंत्री के रूप में छवि निखरी एवं प्रतिष्ठा रही। मोदी काल भी भारत का अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रभावकारी स्थान दिलाने में कामयाब रहा है। कोरोना संकट से निपटने में भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का सहयोग सराहनीय रहा है।